राष्ट्रीय मासिक पत्रिका

भारत वार्ता

भारत वार्ता
www.bharatvarta.news

वर्ष : 3 | अंक : 9 | मार्च 2024 | ₹30

चुनावी-चंदे का खुलता रहस्यलोक!

'जनता के महामहिम' हैं डा. सीपी राधाकृष्णन

जेल तो जाना ही था.....

रोचक बना 2024 का दंगल

इतिहास के आईने में

पलामू का चेरो-खरवार राजवंश

गंगेश्वर सिंह
पूर्व पुलिस महानिदेशक
पश्चिम बंगाल, संप्रति सदस्य, कर्मचारी चयन अयोग पश्चिम बंगाल

वर्तमान झारखंड प्रदेश प्राचीन काल से दुर्गम जंगल पहाड़ के कारण बाह्य शक्तियों के लिए दुर्भेद्ध समझा जाता था। यह सिलसिला मध्यकालीन भारत तक कमोवेश चलता रहा पर केन्द्रीय सत्ता इस पर हमला बोलती रही और इसे अपने पूर्ण अधिकार में लेने की जद्दोजहद भी करती रही भले इसमें उसे पूर्ण सफलता न मिली हो। जनजातीय प्रधान राज्य झारखंड में जो सत्ता का स्वरुप था वह थोड़ा भिन्न था। यहां इसकी शुरूआत मुण्डा और भूमिज जनजाति द्वारा हुई थी। उल्लेख मिलता है कि प्रथम जनजातीय नेता रिसा मुण्डा के नेतृत्व में राज्य निर्माण और शासन प्रबंध हेतु सुतिया पाहन को मुण्डाओं का प्रधान चुना और नागखण्ड नामक राज्य की स्थापना की। विदित है कि नागखण्ड राज्य के अंतिम प्रधान मदरा मुण्डा थे। उसने फणि मुकुट राय को गोद लिया। यहीं से कोकरा (छोटानागपुर) में नागवंश की शुरूआत होती है। झारखंड में एक दूसरी जनजाति भूमिज ने भी धालभूम, बड़ाभूम, पंचेत, सिंहभूम और मानभूम में भूमिज साम्राज्य की स्थापना की जिसका विस्तार पश्चिम बंगाल और उड़ीसा तक था।

झारखंड प्रांत के पलामू में प्राचीन काल से मघ और रक्सेल जाति के शासकों के ऐतिहासिक अवशेष जहां- तहां बिखरे मिलते हैं। मध्ययुग में जब हम प्रवेश करते हैं तब झारखंड के पलामू में चेरो खरवार जनजाति के संयुक्त सैन्य अभियान ने रक्सेल शासकों को पूरी तरह से पलामू क्षेत्र से बेदखल कर दिया और अगले तीन सदी से ज्यादा समय तक चेरो राजवंश का पलामू पर शासन चलता रहा। चेरो- खरवार के इस सैन्य अभियान में 12 हजार चेरो सेना और 18 हजार खरवार सेना थी। जीत के बाद खरवार नायकों को यथायोग्य जागीरदारी और जींदारी से नवाजा गया। पूरे इतिहास में चेरो खरवार शासकों का संबंध पूर्णरुपेण शांतिपूर्ण सह अस्तित्व वाला रहा। आपसी संघर्ष का कहीं नामोनिशान नहीं मिलता।

सासाराम तक साम्राज्य

पलामू में पदार्पण करने से पूर्व सासाराम के विस्तृत क्षेत्र पर इन दोनों जनजाति का साथ-साथ शासन चलता रहा। दो शासक वर्ग में इस तरह का तालमेल बमुश्किल मिलता है। झारखंड के तत्कालीन जनजातीय शासकों के आपसी संबंधों पर एक विहंगम दृष्टिपात करना समीचीन होगा। चेरो-खरवार के मधुर संबंध के वर्णन से स्पष्ट होता है कि क्षेत्रीय शासक कमोवेश अपने-अपने राज्य सीमा में ही सीमित रहते थे और राजकाज में मशगूल रहते थे। राज्य विस्तार से उन्हें ज्यादा सरोकार न था ऐसा प्रतीत होता है। वैसे जंगल-पहाड़ और अन्य प्राकृतिक कारणों से आवागमन आज की तरह सरल न था। यह भी ख्याल में ले लेना अनुचित न होगा कि इस क्षेत्र विशेष की जमीन उतनी उपजाऊ न थी और इससे प्राप्त राजस्व भी सीमित ही होगा तब। ऐसे में सैन्य अभियान खर्चीला होता और राज्य के लिए भारी पड़ता।

पलामू के चंद्रगुप्त मेदिनी राय और चेरो राजवंश का प्राक्रम

इसका अपवाद भी मिलता है। पलामू के प्रतापी चेरो महाराजा मेदिनी राय (1619-34 ?) जिसे पलामू का समुद्रगुप्त कहा जाता है उन्होंने अपनी साम्राज्यवादी महत्वकांक्षा की पूर्ति के क्रम में अपने साम्राज्य का विस्तार करते हुए नागवंशी शासकों की राजधानी दोइसागढ़ (नवरतनगढ़) पर धावा बोल दिया। यह घटना 1615 के बाद की होगी। नागवंशी शासक दुर्जन साल तब मुगलों द्वारा बंदी बना लिए गए थे। राज्य में उथल-पुथल मची थी। मेदिनी राय ने इस स्थिति का फायदा उठाया। नागवंशी सेना मेदिनी राय के समक्ष आत्मसमपर्ण करने को बाध्य हुई। नागवंशी और चेरो शासकों के मध्य शांति हेतु संधि हुई। इस सैन्य कारवाई के फलस्वरुप न केवल चेरो शासकों का वर्चस्व स्थापित हुआ वरन काफी धन भी प्राप्त हुए। जो भी हो इस अपवाद को छोड़ दें तो झारखंड के जनजातीय शासकों में आपसी संबंध मधुर बने रहे।

एक अन्य घटना तो जनजातीय एकता का सबसे बड़ा उदाहरण पेश करता है। सतरहवीं सदी के पहले दशक यानि 1605 ई. में अकबर की मृत्यु से उत्पन्न अराजकता की स्थिति का लाभ उठाते हुए बक्सर में सियाराम राय चेरो शासक के नेतृत्व में उज्जैनिया राजपूत शासकों और मुगलों के खिलाफ बगावत की लहर उठी।

तत्कालीन उज्जैनिया शासक नारायण मल तब आगरा गया था। बक्सर में उज्जैनिया सरदारों गणपति और संग्राम सिंह भी सत्ता हथियाने की ताक में थे। उज्जैनिया और मुगलों ने ही चेरो शासकों को उनके भोजपुर राजसत्ता से च्युत किया था। यह बात उन्हें हजम नहीं हो रही थी। इस अराजकता की स्थिति का फायदा उठाते हुए सियाराम राय (चेरो) ने उज्जैनिया और मुगलों के विरुद्ध लड़ाई छेड़ दी। यह केवल चेरो शासकों की लड़ाई न थी बल्कि उज्जैनिया विरोधी इस लहर में चेरो सेना के साथ सोनपारी चेरो, कधार राजा, आनँदिचक राजा, बेंलौंजा राजा, लोहरदगा राजा और राजा माधव मुण्डा भी शामिल थे। इस लड़ाई का बड़ा रोचक वर्णन मुंशी विनायक प्रसाद की पुस्तक तवारिखे उज्जैनिया में मिलता है। लड़ाई का केन्द्र बक्सर ही था। चेरो और मुण्डा की सम्मिलित शक्ति के आगे उज्जैनिया सेनाओं की एक न चली। जहांगीर ने नारायण मल्ल को तत्क्षण आगरा से बक्सर के लिए रवाना कर दिया। उसके साथ मुगल सेना का एक बक्शी कल्याण सिंह भी 500 घुड़सवार के साथ बक्सर आ धमके। लड़ाई की धारा बदलते देर न लगी। चेरो और मुण्डा सेना हताश हो गयी। ऐन मौके पर राजा माधव मुण्डा सशरीर उस लड़ाई में आ गया और चेरो सेना को उत्साहित करता रहा। अन्ततः उज्जैनिया और मुगल सेना की जीत हुई। स्वयं राजा माधव मुण्डा सहित अनेक राजा और चेरो सरदार इस लड़ाई में शहीद हुए। तवारिखे उज्जैनिया में उल्लेख है कि घमासान लड़ाई देख नारायण मल्ल घबड़ा गया था और अपनी जीत सुनिश्चित करने के लिए उसने एक ब्राह्मण को विन्ध्याचल में मन्नत मांगने को भेजा था। कहते हैं चेरो और मुण्डा सेना से जीतने के उपरांत कृतज्ञतावश नारायण मल्ल ने इस ब्राह्मण

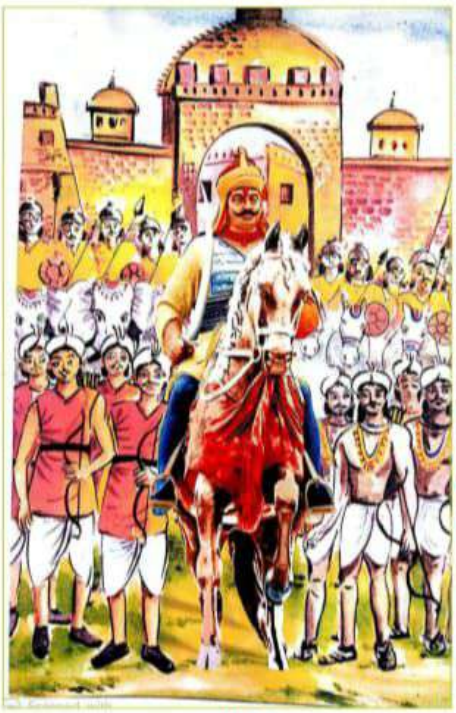

राजा मेदिनी राय

राजा गोपाल राय

को लगानमुक्त जमीन (मददेमाश) दी थी। इतना नहीं उज्जैनिया शासक नारायण मल्ल को चेरो मुण्डा विरोधी इस लड़ाई में जीत के लिए राजा मान सिंह की अनुशंसा पर मुगल शासक द्वारा 1000 जाट और 800 सवार का मनसब दिया गया था।

घटना यह दशार्ती है कि तत्कालीन मध्ययुगीन शासक व्यवस्था में जनजातीय सैन्यशक्ति को हल्के में नहीं लिया जाता था। दूसरी बात यह भी गौर करने लायक है कि जनजातीय सैन्यशक्ति के साथ अन्य क्षेत्रीय शक्तियां भी हाथ मिलाकर चलने में यकीन करती थीं, कारण चाहे जो भी हो।

इतिहास पर एक नजर

अब चेरो राजवंश के इतिहास पर एक नजर। प्रागैतिहासिक काल से ही शाहाबाद और आसपास के क्षेत्र में विभिन्न जनजातियां जैसे भार, चेरो और शबर का शासन था। चेरो समुदाय अर्द्ध-द्रविड़ है। सर हेनरी इलियट का मानना है कि चेरो भार जाति या कोल जाति की ही एक शाखा है। कर्नल डाल्टन का मत है कि एक समय चेरो जाति का गंगा की तराई वाले सम्पूर्ण क्षेत्र पर आधिपत्य था। प्रतीत होता है चेरो और कोल साथ-साथ राज करते थे। चेरो जब तक हिन्दू धर्म से पूरी तरह प्रभावित होते उससे पूर्व ही कोल शाहाबाद छोड़कर छोटानागपुर के जंगलों में आकर बस गये थे। चेरो शासकों द्वारा निर्मित हिन्दू देवी-देवताओं के असंख्य मंदिर इसकी गवाही देते हैं। इसके विपरीत गरीब चेरो स्थानीय देवी-देवता की पूजा करते थे ठीक वैसे ही जैसे अन्य जनजाति समुदाय करते रहे। कोल परिवार की तरह चेरो अपने को नागवंशी बतलाते हैं। चेरो राजवंश परम्परा में मान्यता है कि वे च्यवन ऋषि

की संतान हैं। बुकानन का मानना है कि चेरो गौतम बुद्ध के समकालीन सुनक परिवार के राजकुमार थे। वे राज विस्तार के लिए अपनी सेना तैयार कर निकल पड़ते थे। चेरो राजवंश का शासन तब से मध्यकालीन भारत में पूर्वी उत्तर प्रदेश, सम्पूर्ण बिहार, छतीसगढ़ के विस्तृत भूभाग में फैला था।

बौद्धगया के नजदीक एक अभिलेख मिला है जिसमें फूदीचन्द्र नामक राजा का उल्लेख है जो चेरो था। शाहाबाद में चेरो राजवंश के प्रमुख राज्य थे तुरांवगढ़ (भोजपुर), बहिया और देव मार्कण्डेय। प्राचीन भारत के इतिहास में चेरो राजवंश के शासन, राज्य, राजा, उसकी कीर्ति आदि का जो जिक्र आता है वह टुकड़ों में है, खंडित है और कभी-कभी अबूझ भी लगता है। गोपालगंज के चेरो राजा मनन सिंह, कैमूर का प्रतापी राजा मुंड, चैनपुर (कैमूर) का राजा चंड, प्रसिद्ध शक्तिशाली शासक महारथ चेरो, पलामू का समुद्रगुप्त कहा जाने वाला चेरो शासक महाराजा मेदिनी राय आदि। जब कीर्ति की बात आती है तब छपरा में चेरो कालीन शहर मांझी, दिघवा दुबौली में चेरो राजा के विचित्र टीले, राजपुर का किला, थावे का वनदुर्गा मंदिर, पलामू किला आदि इतिहास प्रसिद्ध हैं।

चेरो राजसत्ता की महत्ता इस बात से प्रमाणित होती है कि ऐत्रेय अरण्यक 2-2-1 में बंग और मगध के समतुल्य चेरो को रखा गया है। यह भी उल्लेख योग्य है कि चेरो वैदिक नियमों का तब पालन नहीं करते थे। हिन्दू, धर्म ग्रंथों के अलावे ऐतिहासिक ग्रंथों में भी चेरो (चेरु) का लगातार उल्लेख होता रहा है विशेषतः सल्तनत और मुगलकालीन तमाम ऐतिहासिक ग्रंथों में।

मध्यकालीन सल्तनत काल में भारत के राजनीतिक क्षितिज पर कई नई शक्तियां पुरानी शक्तियों को विस्थापित करने में लगीं थीं। मालवा और धार वाले क्षेत्र में तब उज्जैनी और परमार राजपूतों का शासन था जिन्हें खिलजी सेना से मुंह की खानी पड़ी और भागकर शाहाबाद के चेरो शासित क्षेत्र में आ धमके। उज्जैनी शासक भोजराज अपने पुत्र देवराज-2 के साथ शाहाबाद में 1309 ईसवी में आया और चेरो राजा मुकुन्द ने उन्हें जागीर देकर स्वागत किया। राजा मुकुन्द मुस्लिम आक्रांताओं के हाथों मारा गया। तत्पश्चात उसका पुत्र शहाबल राजा बना। यहीं से उज्जैनिया और चेरो शासकों में संघर्ष शुरू हुआ। चेरो शासकों को बेदखल कर उज्जैनिया शाहाबाद (भोजपुर) पर अपना राज स्थापित कर लिया। अब चेरो राजवंश के संघर्ष के दिन थे। एक ही साथ इनको उज्जैनिया, परमार और मुस्लिम शक्ति से जूझना पड़ रहा था। तकरीबन अगले दो सौ बरसों तक चेरो राज वंश इनसे अनवरत भिड़ता रहा। उस कालखंड में शेरशाह और चेरो शक्ति की भिड़त जगजाहिर है। 1538-39 ई. का वह कालखंड महारत चेरो और अफगान सैन्य शक्ति के बीच बेमेल भिड़त का काल है।

पलामू में कैसे पड़ी चेरो शासन की नींव

अब चेरो शक्ति करीब दो सौ बरसों तक खानाबदोश की तरह अपने ही राज में भटक रही थी और उज्जैनिया और अफगान की सम्मिलित शक्ति से जूझती रही। मुझे लगता है इसी कालखंड में निरुपाय होकर वे पलामू के विस्तृत भूभाग पर कब्जा कर लिया हो। वहां अपना भंडार बना अपनी शरणस्थली बना ली हो। साथ ही भोजपुर (शाहाबाद) के पुश्तैनी क्षेत्र को पुनः प्राप्त करने की दिशा में भी वे प्रयासरत दिखते रहे हों। चौदहवीं सदी से सतरहवीं सदी के प्रथम दशक तक चेरो और उज्जैनिया, अफगान और मुगलों की सम्मिलित शक्ति से चेरो राजवंश भिड़ता रहा। अन्ततः सोलहवीं सदी के मध्य में 12 हजार चेरो सेना और 18 हजार खरवार सेना चेरो राजा भगवत राय के योग्य सैन्य संचालन में देवशाही के पूरनमल के साथ पलामू के रक्सेल राजा मान सिंह पर आक्रमण कर फतह हासिल की और पलामू पर चेरो राजवंश की नींव डाली जो अगले 1813 ई. तक जारी रहा।

पलामू पर चेरो राजवंश का शासन कई ऐतिहासिक घटनाओं के लिए प्रसिद्ध है। इस बीच मुगलों द्वारा पलामू के चेरो राजवंश पर लगातार आक्रमण होते रहे। चेरो सेना ने भी मुगल सेना को मुंहतोड़ जवाब दिया। अकबर ने मान सिंह को बिहार का सूबेदार नियुक्त किया। मान सिंह ने 1589 ई. चेरो राज पलामू पर हमला कर पूरी तरह से लूटा। तत्पश्चात 1641 ई. में शाहिस्ता खान, 1643 ई. में जबरदस्त खाँ और 1660 ई. में दाऊद खां ने पलामूँ पर आक्रमण कर पलामू को श्रीहीन बनाने में कोई कसर न छोड़ी।

प्रजावत्सल शासक

पलामू के प्रमुख चेरो शासकों अनंत राय, प्रताप राय और मेदिनी राय का नाम बड़े गर्व के साथ आज भी पलामूवासी लेते हैं। उन्होंने पलामू राज पर न सिर्फ शासन किया वरन्प्रजावत्सलता का अनुपम उदाहरण भी रख छोड़े। शायद उस काल के शासकों में कोई विरला ही हो जो अपनी प्रजा के लिए पौष्टिक आहार लेकर सोचता हो। पर मेदिनी राय सबसे अलग थे। उनकी शान में आज भी पलामू में यह कहा जाता है-

धन्न-धन्न राजा मेदनिया। घर-घर बाजे मथनिया।

अंग्रेजों का कब्जा और चेरो राजवंश का पतन

ब्रिटिश शासकों ने मार्च 1771 ई. को पलामू किला पर कब्जा कर लिया। चेरो शासकों में आपसी मतभेद और राजसत्ता की भूख ने शासन व्यवस्था को जर्जर कर दिया। गोपाल राय अंग्रेजों के कठपुतले चेरो शासक बने जिनकी राजधानी पलामू

किला से शाहपुर चली गयी। उदवंत राम अखौरी (एजेंट) की हत्या के जुर्म में अपने ज्येष्ठ भ्राता कर्णपाल राय के साथ आजीवन जेल में रहे। विधि का विधान तो देखिए जो कभी न्यायधीश की तरह सजा सुनाता था वहीं सजायाफ्ता हो गया।

चूरामन राय चेरो राजवंश का अंतिम राजा बना। फरवरी 1813 ई. में बकाया लगानन देने के कारण पलामू राज नीलाम हो गया। हजारों बरसों का अर्द्धलिखित चेरो राजवंश का यहीं सूर्यास्त भी हो गया।